Volume: 1 Issue: 5 Pages: 38-39

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133

Received: 02/December/2021 Int. J Res. Acad. World. 2022; 1(5):38-39 Accepted: 14/January/2022

स्वतंत्रता सेनानी रूड़मल सोगण एवम् विविध रचनात्मक कार्य

*1(a, b)धर्मराज, [2]जयन्त निहार बायल और [3]डॉ. कविता शर्मा

*1(a)प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, छापराड़ी, जयपुर, राजस्थान।
(b)शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[2]असिसटेन्ट प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान।

[3]एसोसिएट प्रोफेसर, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे योगदान देने वाले दलित व्यक्तियों में श्री रूड़मल सोगण का नाम प्रमुखता से लिया जाता हैं। इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य स्वाधीनता आन्दोलन में दलितों के द्वारा सक्रिय रूप से स्वाधीनता आन्दोलन में भूमिका का निर्वहन किया है। जिसे इतिहास के अध्येयताओं को जानना जरूरी हैं। इस आन्दोलन में भारत के सभी वर्ग के लोगों के द्वारा जाति–पाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ग आदि के भेदभाव को भुलाकर कंधें से कंधा मिलाकर दलितों ने भी इस स्वतंत्रता संग्राम में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया था। इनके योगदान को इतिहास के पृष्ठों पर अंकित करना या राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के मुख्य धारा में जोड़ने के उद्देश्य से प्रेरित होकर यह शोध पत्र उल्लेखित है।

मूल शब्दः स्वतंत्रता संग्राम, दलित, आन्दोलन, संप्रदाय, खादी

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे योगदान देने वाले दलित व्यक्तियों में श्री रूड़मल सोगण का नाम प्रमुखता से लिया जाता हैं। श्री रूड़मल सोगण का जन्म बासाँ फतेहपुरा (जयपुर) के गरीब बुनकर परिवार में 10 नवम्बर 1917 ई. को हुआ था। श्री रूड़मल सोगण बचपन से ही उत्साही व कर्मयोगी विधार्थी थे। आपके पिताजी का नाम श्री कानाराम सौगण व माताजी का नाम श्रीमती बाली देवी था। आपका विवाह टांकरड़ा (चौमूँ) निवासी श्री भैंरूराम हरसोलिया की सुपुत्री गोरा देवी से हुआ था। खादी की टोपी के आकर्षण और तिरंगे झण्डे की हवा ने आपके मानस को आन्दोलित कर दिया और आप अपने उज्ज्वल भविष्य की सभी कल्पनाओं को तिलांजली देकर पढ़ाई को त्याग कर पूज्य बापू महात्मा गांधी के आह्वान पर सन 1936 ई0 में जयपुर राज्य की पिछड़ी जनता में जागृति का शंखनाद करने के लिये, पूज्य बापू की देखरेख में सचांलित अखिल भारत व चरखा सघं की राजस्थान शाखा में भर्ती हो गये। देशी रियासतों में उस समय सीधा राजनैतिक काम करना सभंव नहीं था। खादी व चरखा के माध्यम से ही जन जागृति के लिए घर–घर पहुँचना होता था। यह कार्य सन् 1936 ई. से श्री रूड़मल सोगण ने बड़ी रूचि और उत्साह के साथ अंगीकार किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति में योगदान

अखिल भारत चरखा संघ उस समय खादी व चरखे का तो प्रचार करता ही था साथ–2 इसके कार्यकर्त्ता राजनैतिक जन जागृति का शंखनाद फूँकने का काम घर–2 पहुँच कर करते थे। अवसर आने पर इसके कार्यकर्त्ताओं की फौज अपने पदों से त्यागपत्र देकर सीधे स्वतंत्रता आन्दोलन में कूदकर देशभक्ति का सबूत देते थे। आप गांधीजी के आह्वान पर सन् 1936 में ''अखिल भारत चरखा संघ'' की शाखा में भर्ती हो गए। आगे चलकर आप चरखा सघं से त्यागपत्र देकर प्रजामण्डल द्वारा छेड़े गये सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पड़े। 25 फरवरी,1939 ई. को आपको गिरफ्तार कर 06 माह की कारावास सजा के लिए केन्द्रीय कारागार, जयपुर में भिजवा दिया था।

घनश्यामदास बिड़ला की मध्यस्थता से पूज्य बापू गांधी के साथ जयपुर के तत्कालीन महाराजा से समझौता हुआ जिसमें प्रजामण्डल की कुछ मांगे व प्रस्ताव स्वीकार कर लिए गए। जयपुर दरबार के प्रधानमंत्री के आदेश पर सभी बन्दियों के साथ श्री रूड़मल सोगण को भी रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होने के पश्चात् आपने राजस्थान में चरखा संघ के कार्यों को पुनः प्रारम्भ किया। आपको अक्टूबर, 1988 में राजस्थान सरकार की ओर से राज्यपाल श्री सुखदेव प्रसाद के कर कमलों से ताम्रपत्र भेंट किया गया। स्वतंत्रता संघर्ष के फलस्वरूप आपको विभिन्न संस्थाओ व संगठनों द्वारा अनेकों पुरस्कारों से नवाज़ा गया था।

विविध रचनात्मक कार्य

पूज्य बापू को देश के अठारह सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमों में हरिजन सेवा का कार्य सर्वाधिक प्रिय था। बापूजी ने स्पष्ट आह्वान किया था कि अगर छुआछूत कायम रही तो हिन्दू धर्म नष्ट हो जायेगा। बापूजी ने छुआछूत को मिटाने हेतु जीवन का सबसे लम्बा उपवास किया। भारत देश के कर्मठ नेताओं ने छुआछूत का बीड़ा उठाया और इस हेतु हरिजन सेवक संघ की स्थापना की गई। खादी एवं रचनात्मक कार्य के साथ आपने हरिजनोद्वार के कार्य को मुख्य रूप से संकल्प के साथ करने का निश्चय किया। आपके द्वारा विविध क्षेत्रों में विभिन्न रचनात्मक व सृजनात्मक कार्य

***Corresponding Author:** धर्मराज

सम्पादित किए गए। आप महात्मा गांधी के साहित्य तथा उनके द्वारा सम्पादित "हरिजन" समाचार पत्र के नियमित पाठक रहे।

विभिन्न छात्रावास निर्माण कार्य

आपकी सार्वजनिक निर्माण कार्य यथा–मन्दिर, धर्मशाला, स्कूल, छात्रावास आदि में विशेष रूचि थी। जेल से रिहा होने के पश्चात् आपने रचनात्मक कार्यो के साथ–साथ हरिजनोद्वार कार्यो को करने का निश्चय किया। इस क्रम में विशेष उल्लेखनीय है कि हरिजनों में सामान्य शिक्षा व उच्च शिक्षा का प्रसार करने के लिए आपने अपने साथियों (श्री बाबू कृष्ण स्वरूप पूर्व चिकित्सा मंत्री दिल्ली सरकार, श्री भूरामल गुरावा, श्री नाथूलाल वर्मा) को जुटाकर सन् 1945 में श्री कृष्णा छात्रावास, सीकर की स्थापना की। इसके आप सस्थापक अध्यक्ष मनोनीत किये गये। इस छात्रावास के स्नातक श्री नाथूलाल वर्मा राजकीय उच्च माध्यमिक विघालय के प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत हुये है। इसी क्रम में सन् 1955 में गांधी छात्रावास, अमरसर एवं सन् 1965 में श्री जवाहर लाल नेहरू छात्रावास, चौमूँ की स्थापना की। आप इन सभी छात्रावासों के संस्थापक अध्यक्ष भी रहे। इन सभी छात्रावासों के अधिकांश छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त कर केन्द्र व राज्य सरकारों में विविध महत्वपूर्ण व राजपत्रित अधिकारियों के पदों पर कार्यरत हैं। आपके प्रयासों से ''राजस्थान बलाई विकास संस्थान शाहपुरा'' के माध्यम से साईवाड़ मोड़ (त्रिवेणीधाम) में बलाई छात्रावास (कबीर छात्रावास) हेतु यहाँ के श्री जयसिंह राजपूत से 3250 वर्गगज जमीन प्राप्त की गई जिसमें समाज के आर्थिक सहयोग से 13ग10 के 12 कमरों व 25ग20 का एक सभाकक्ष निर्माण कार्य पूरा करवाया गया। श्री बाबू कृष्णस्वरूप ने एक लाख रूपये के आर्थिक सहयोग से इस भूखण्ड की चारदीवारी व बिजली कनेक्शन का कार्य किया था। इस बलाई छात्रावास के विकास में समाज के विभिन्न व्यक्तियों का सहयोग रहा है जिससें समाज के सेकड़ौ छात्र आवासीय सुविधा व शिक्षा से लाभान्वित हो रहे है इस छात्रावास के शिलान्यास व प्रारभिक विकास मे शाहपुरा के डॉ. बी. डी. नैनावत, स्व. कन्हैया लाल सिवोड़िया, नेताजी श्री गणपत लाल वर्मा, श्री प्रभु दयाल बुनकर, श्री रघुनाथ प्रसाद व श्री रिछपाल बिकुन्दिया का विशेष योगदान रहा है।

खादी बुनकरों की सेवायें

खादी सस्था में कार्यरत रहते हुए आपका ध्यान बुनकरों की पीड़ित आर्थिक हालात पर गया व आपने बुनकरों को संगठित करने का प्रयास किया। सन 1924 में महात्मा गांधी का खादी कार्य राजस्थान में ग्राम अमरसर जयपुर से प्रारम्भ किया गया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् "अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता श्री पट्टाभि सीतारमैया ने की थी।

इस अधिवेशन में तिरंगा झण्डा फहराया जाना था तथा इस झण्डे का निर्माण हाथ कत्ते सूत से श्री सत्यनारायण गोठवाल (अमरसर) नामक बुनकर कलाकार ने कांग्रेसाध्यक्ष श्री पट्टाभि सीतारमैया को भेंट किया। यह झण्डा आज भी दर्शनार्थ जयपुर के म्यूजियम (अलबर्ट हॉल) मे रखा हुआ है। इस अधिवेशन के अवसर पर "हरिजन मजदूर किसान सम्मेलन" का आयोजन किया गया जिसके संयोजक श्री रूड़मल सोगण को नियुक्त किया गया था। इस सम्मेलन को महात्मा गांधी, पं जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल व बाबू जगजीवन राम ने सम्बोधित किया था। इसी क्रम में आपने 21 दिसम्बर 1965 को रींगस जिला सीकर में राजस्थान खादी बुनकर कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन किया था। इस प्रान्तव्यापी सम्मेलन में खादी संस्थाओ के अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं व बुनकरों ने हजारों की संख्या में भाग लिया। इस सम्मेलन में खादी कार्यो व कामगारों के हितार्थ प्रस्ताव स्वीकार किये। सम्मेलन की अध्यक्षता तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री स्व. बाबू जगजीवनराम ने की। इन प्रस्तावों में रखे गये खादी सस्थाओं के गठन व प्रबन्ध में कार्यकर्त्ताओं व कामगारों की साझेदारी अनिवार्य करने सम्बन्धित प्रस्ताव को खादी ग्रामोधोग आयोग ने 22 वर्ष बाद कार्य रूप में लाने के लिये अनिवार्यता से लागू कर दिया था। इन प्रस्तावों की क्रियान्विति के फलस्वरूप बुनकरो को आर्थिक लाभ मिला व महत्व बढ़ा। सन् 1962 में आपने अपने साथियों को साथ लेकर श्री द्वारका नाथ की प्रेरणा से व श्री भैंरूलाल अग्रवाल के निर्देशन में ''खादी ग्रामोद्योग मण्डल अमरसर'' का गठन किया था। इस संस्था का प्रधान कार्यालय अमरसर (जयपुर) में है तथा संस्था का निजी भवन, कुँआ, कृषि भूमि व खादी वस्त्रागार हैं। जुलाई 1962 से इस खादी संस्था ने कार्य आरम्भ किया और आप इसमें संस्थापक मंत्री पद पर विराजमान हुए।

निष्कर्ष

श्री रूड़मल सोगण सन् 1936 ई. से खादी ग्रामोधोग, रचनात्मक कार्यो व जनजागृति हेतु स्वतंत्रता आन्दोलनों के लिए समर्पित रहे। तब से आप मृत्युपर्यन्त इन कार्यों में अनवरत् रूप से सक्रिय रहे। गांधीजी द्वारा समर्थित सविनय अवज्ञा आन्दोलन, नमक सत्याग्रह, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, भारत छोड़ो आन्दोलन आदि में आपकी भूमिका सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में रही। उपर्युक्त वर्णित आन्दोलनों में भूमिका व रचनात्मक कार्यो हेतु समाज व राष्ट्र आपका हमेशा ऋणी रहेगा। हम आपके इस अमूल्य व अविस्मरणीय योगदान को हमेशा याद रखेंगे। इस प्रकार चरखा सघं के कार्यो, विविध रचनात्मक कार्यो, गाधीजी समर्थित विभिन्न आन्दोलनों, छात्रावासों के निर्माण, खादी बुनकरों को प्रदत्त सेवाओं के फलस्वरूप समाज व राष्ट्र आपका ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. सुखबीर सिंह गहलोतः "राजस्थान का इतिहास कोश"
2. रतनलाल मिश्राः "शेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानी"
3. भगवानदास केलाः "देशी राज्यों की जनजागृति"
4. डॉ. तारादत निर्विरोधः "आजादी के जनक" (राजस्थान के स्वंतत्रता सेनानी)
5. परिजनों के पास उपलब्ध स्रोत व साक्षात्कार
6. जे. सी. ब्रुकः "पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ जयपुर"
7. डॉ. आर. पी. व्यासः "स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान का योगदान"
8. जहूर खां मेहरः "राजस्थान में आजादी रो आन्दोलन"
9. अनुकृति चौहानः "राजस्थान में आजादी के तराने"
10. गोविन्द नारायण सैनी (शिक्षक): "श्रीमाधोपुर का परिचय व इतिहास"
11. डॉ. मन्जू गुप्ताः "स्वतंत्रता संग्राम एवं जमनालाल बजाज"
12. बलाई समाज चेतना स्मारिका, शाहपुरा (जयपुर)
13. श्री राकेश वर्माः "उदयमेघ" (साप्ताहिक पत्रिका)
14. जगदीश सिंह गहलोतः "राजपूताने का इतिहास"